STEPPING STONE
SCHOOL (HIGH)

CLASS :9

Subject:2nd language Hindi
Date:11.06.20
Topic: hindi literature
Limit:40mins

Worksheet No.:17

[Copy the questions and solve them on a sheet of paper date wise. Keep the worksheets ready in a file to be submitted on the opening day.]

साहित्य सागर:::गिरिधर की कुंडलियाँ
कवि---गिरिधर कविराय

Scanned by TapScanner

५.रहिए लटपट काटि दिन, बरु घामे माँ सोय।
छाँह न बाकी बैठिये, जो तरु पतरो होय॥
जो तरु पतरो होय, एक दिन धोखा देहैं।
जा दिन बहै बयारि, टूटि तब जर से जैहैं॥
कह गिरिधर कविराय छाँह मोटे की गहिए।
पाती सब झरि जायँ, तऊ छाया में रहिए॥

5

६.पानी बाढ़ै नाव में, घर में बाढ़े दाम।
दोऊ हाथ उलीचिए, यही सयानो काम॥
यही सयानो काम, राम को सुमिरन कीजै।
पर-स्वारथ के काज, शीश आगे धर दीजै॥
कह गिरिधर कविराय, बड़ेन की याही बानी।
चलिए चाल सुचाल, राखिए अपना पानी॥

6

७.राजा के दरबार में, जैये समया पाय।
साँई तहाँ न बैठिये, जहँ कोउ देय उठाय॥
जहँ कोउ देय उठाय, बोल अनबोले रहिए।
हँसिये नहीं हहाय, बात पूछे ते कहिए॥
कह गिरिधर कविराय समय सों कीजै काजा।
अति आतुर नहिं होय, बहुरि अनखैहैं राजा॥

7

Scanned by TapScanner

गिरिधर की कुंडलियाँ

गिरिधर

5. "रहिए लटपट .... छाया में रहिए ॥"

व्याख्या :- प्रस्तुत पंक्तियों के द्वारा कवि कहते हैं कि हमें विश्वसनीय तथा समर्थ लोगों का ही सहारा लेना चाहिए। कवि कहते हैं कि हमें अपने दिन चाहे भले ही परेशान होकर, लड़खड़ाते हुए या चूप में ही सोते हुए बिता देने चाहिए परन्तु ऐसे पेड़ का सहारा कभी नहीं लेना चाहिए जो कि दुर्बल हो या मरोसे के लायक न हो क्योंकि ऐसे पेड़ हमें कभी भी धोखा दे सकते हैं। कवि कहते हैं कि हमें शक्तिशाली पेड़ और अपने वचन के पक्के और सच्चे मनुष्यों का ही सहारा लेना चाहिए क्योंकि ये हमें कभी भी धोखा नहीं देंगे ॥।

6. "पानी बाढ़ै नाव .... अपना पानी ॥"

व्याख्या :- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने हमें अच्छे कार्य करते हुए अपना नाम और सम्मान बढ़ाने की सलाह दी है। कवि कहते हैं कि यदि नौका में पानी भरने लगे तो उसे निकालते रहना चाहिए नहीं तो नौका डूब जाएगी। ठीक इसी प्रकार यदि घर में धन अधिक हो जाए तो उसे भी परोपकार में लगा देना चाहिए। कवि कहते हैं कि हमें प्रभु को याद करते हुए अच्छे कार्य करते रहना चाहिए और अपना मान-सम्मान बचाए रखना चाहिए ॥।

Scanned by TapScanner

—x—

7. " राजा के दरबार . . . . . अनखैहैं राजा ॥"

<u>व्याख्या</u> :- प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि कहते हैं कि हमें अपने ओहदे को ध्यान में रखते हुए समय और स्थान के अनुसार कार्य करना चाहिए।
कवि कहते हैं कि हमें राजा के दरबार में सही मौका देखकर ही जाना चाहिए और अपने दर्जे और स्तर को ध्यान में रखकर सही स्थान पर बैठना चाहिए। बिना पूछे न तो उत्तर देना चाहिए और ना ही ज़ोर - ज़ोर से हँसना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि हमें हर स्थान पर अनुशासन का पालन करना चाहिए अन्यथा राजा नाराज़ हो जाएँगे ॥

Scanned by TapScanner